# भारतः विश्व स्तनपान सप्ताह
## 01 से 07 अगस्त, 2019

# सशक्त अभिभावक, संभव स्तनपान
## आज एवं बेहतर कल के लिये

लक्ष्य :-

1. हम जनमानस को स्तनपान के बारे में हमारी नीतियों तथा कार्यक्रमों में कमियों एवं अपर्याप्त स्तनपान की लागत के बारे में जागरूक करना चाहते है।

2. हम स्तनपान पर नीतियों एवं कार्यक्रमों की कमियों को दूर करने की हिमायत करना चाहते हैं।

अपर्याप्त स्तनपान की लागत बहुत अधिक है एवं इसे नजर अंदाज करना मुश्किल है।

## परिचय

विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा यूनिसेफ के अनुसार बच्चों के समुचित स्वास्थ्य, मृत्यु से बचाव, पोषण और विकास के लिये चार कार्य आवश्यक है।

1– जन्म के 01 घंटे के अन्दर स्तनपान शुरू करायें।

2– पहले 06 महीने तक केवल स्तनपान करायें।

3– 06 माह पूरा होने पर घर का बना अनुपूरक आहार दें तथा स्तनपान 02 वर्ष या इससे अधिक समय तक जारी रखें।

4– जन्म के तुरन्त बाद बच्चे का माँ से चिपका कर रखें (Skin to Skin contact)।

विख्यात मेडिकल जर्नल लैन्सेट ने 2016 में पूरी दुनिया से जुटाये तथ्यों के माध्यम से यह साबित किया कि हमें क्यों स्तनपान में ज्यादा संसाधन लगाने चाहिये।

भारतवर्ष में सिफ 55% बच्चों को पहले 06 माह तक माँ का दूध मिलता है और सिर्फ 41% जन्म के एक घंटे के अन्दर स्तनपान शुरू कर पाते हैं।

**सम्पूर्ण स्तनपान न करवा पाने से प्रतिवर्ष हमें कितना नुकसान होता है, इसके तथ्यों पर नजर डालें :–**

1– प्रतिवर्ष निमोनिया तथा डायरिया (टट्टी, उल्टी) में 01 लाख बच्चों की मृत्यु। ये जिन्दगियाँ स्तनपान से बच सकती हैं।

2– 3.47 करोड़ डायरिया की घटनाएं।

3– 24 लाख निमोनिया की बीमारी।

4– 40,382 बच्चों में मोटापे की बीमारी।

5– 7976 माताओं में स्तन कैंसर।

6– 1748 में अण्डाशय का कैंसर।

7– 87855 माताओं में टाइप–2 डायबिटिज (मधुमेह)।

8– 0–23 माह तक के बच्चों के परिवारों को डिब्बे के दूध पर 25393.77 करोड़ रूपये प्रतिवर्ष खर्च करने पड़ते हैं। यह भारतीय परिवारों की मासिक आमदनी का लगभग 19.4% पड़ता है।

9– जानवर का दूध पीने से होने वाली बिमारियों के इलाज में 727.18 करोड़ रूपये खर्च होते हैं।

स्तनपान को बढ़ावा देने के लिये स्त्रियों को सही जानकारी देने की आवश्यकता है। उन्हें घर के अन्दर, स्वास्थ्य केन्द्रों तथा कार्य स्थलों पर मदद की आवश्यकता है, ताकि वे हर जगह सुगमता पूर्वक स्तनपान करवा सके। इस वर्ष के स्तनपान सप्ताह का उद्देश्य है कि हम महिलाओं को ऐसा समर्थकारी (Enabling) वातावरण दे सके जिससे स्तनपान में उत्तरोत्तर वृद्धि हो। भारतवर्ष में तीन क्षेत्रों में हमारी नीतियों तथा कार्यक्रमों पर ध्यान देने की जरूरत है। ये क्षेत्र हैं शासन, संसाधन, स्वास्थ्य केन्द्रों की सेवाओं तथा प्राकृतिक आपदाओं में हमारी नीतियाँ।

## अपर्याप्त स्तनपान के नुकसानः (भारतवर्ष में प्रतिवर्ष)
## बच्चो की मृत्यु (जो रोकी जा सकती है)

# 100,000

दस्त के मामले
**34,791,524**

निमोनिया के मामले
**2,470,429**

मोटापा
**40,382**

स्तन कैसर
**7,976**

अण्डाशय कैंसर
**1,748**

टाइप 2 डायबिटीज
**87,855**

स्वास्थ्य सेवाओं की कीमत
**₹ 727.18** करोड़*

डिब्बे के दूध की कीमत
**₹ 25393.77** करोड़*

* Extrapolated from the tool, 'The Cost of Not Breastfeeding Tool' (1 US$ = INR 68.5672 as on 16 July 2019)

## भारतवर्ष में स्तनपान की नीतियों एवं कार्यक्रमों की स्थिति–

चित्र 1– शिशु तथा छोटे बच्चों में स्तनपान एवं अनुपूरक आहार नीतियां एवं कार्यक्रम (IYCF)

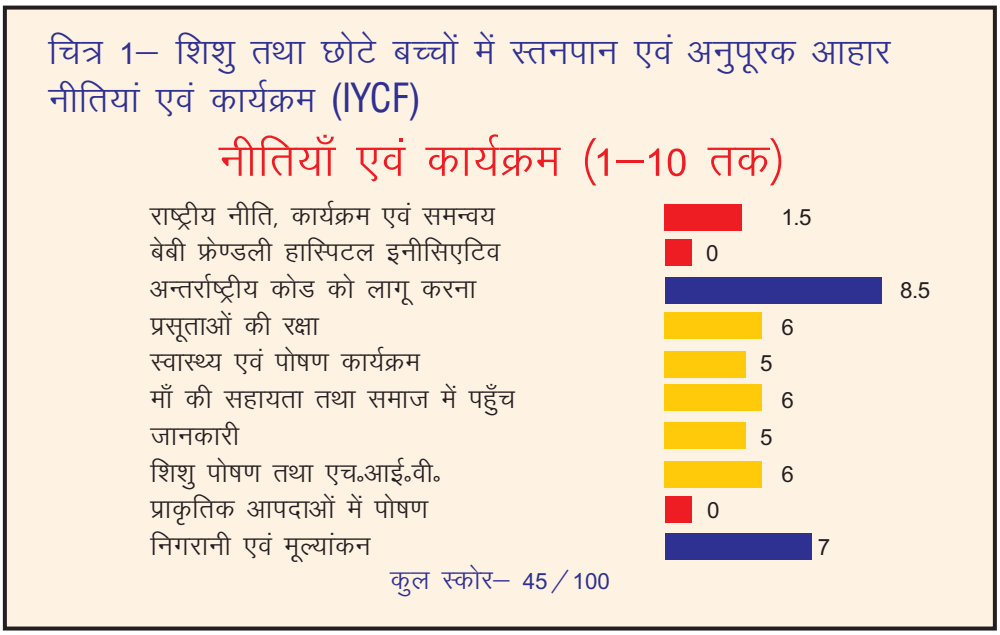


तीन क्षेत्रों में हमारी हालत खराब है (इन्हें लाल रंग में दिखाया गया है)

1— भारत वर्ष में स्तनपान की कोई सरकारी नीति, कार्यक्रम की रूपरेखा या फंडिग नहीं है। एक राष्ट्रीय संचालन समिति है, जिसके निर्णयों को 3 साल से लागू नहीं किया गया है।

2— BFHI को अभी ठोस शक्ल नहीं मिल सकी है, चाहे वो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय हो या माँ (MAA) प्रोग्राम स्वास्थ्य केन्द्रों पर तथा समाज में आज भी मातायें स्तनपान सम्बंधी सहायता के लिये परेशान रहती है। डिब्बे के दूध का अनावश्यक इस्तेमाल होता है। यह कार्यक्रम 2016 में शुरू किया गया था ताकि स्तनपान को स्वास्थ्य केन्द्रों तथा प्रसूता केन्द्रों में बढ़ाया जा सके।

3— प्राकृतिक आपदाओं में बच्चों की हालत सबसे खराब होती है। फिर भी हमारे यहाँ इसके लिये कोई नीति नहीं है।

**भारत वर्ष का लक्ष्य —**

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने पूरी दुनिया में 6 माह तक सम्पूर्ण स्तनपान को 2012 के 38% से 2025 तक 50% बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। इसलिये हमें भी 54.9% से बढ़कर 65.7% तक पहुँचना होगा।

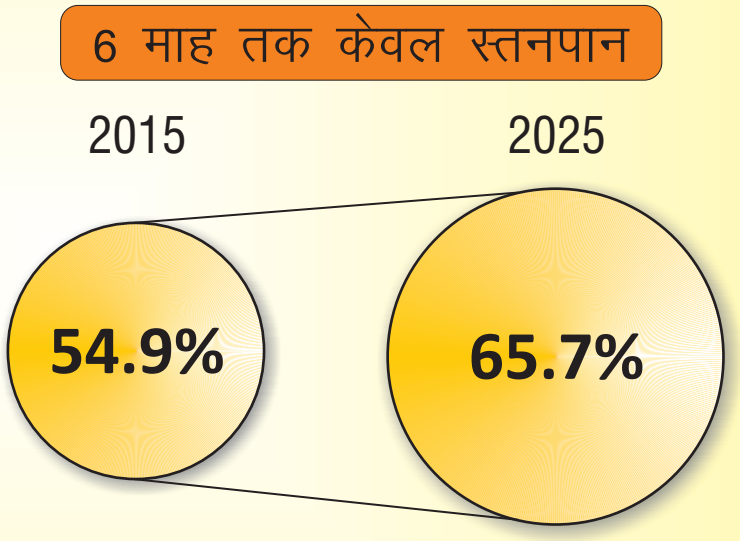


# कार्य करने के हेतु कुछ सुझाव (Action Ideas)

## राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर नीति निर्माताओं/कार्यक्रमों संचालकों के लिये

1— स्तनपान एवं IYCF की राष्ट्रीय संचालन समिति को सक्रिय किया जाए।

2— एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जाय, जिसमें राष्ट्रीय योजना का एक्सन प्लान बने, जिसमें सभी राज्य शामिल हों। World Breast feeding Costing Inititative (WBCI) के उपकरणों को कार्यक्रम तथा बजट बनाने में इस्तेमाल को।

3— स्तनपान न करवाने में देश को कितना नुकसान हो रहा है, इसका अध्ययन वित्तमंत्रालय तथा प्रधानमंत्री की आर्थिक मामलों की समिति को करना चाहिये। कार्यक्रमों को मूर्त रूप देने हेतु बजट की व्यवस्था हो।

4— केन्द्र में पूर्णकालिक अधिकारी की इस कार्य हेतु नियुक्ति।

5— CMO (मुख्य चिकित्साधिकारी) को जिला स्तर पर IMS एक्ट को लागू करने की जिम्मेदारी दी जाय। इसका गजट में प्रकाशन हो।

6— माँ (MAA) प्रोग्राम को मजबूत किया जाय। इसके लिये स्वास्थ्य केन्द्रों का मूल्यांकन, ग्रेडिंग तथा पुरस्कार दिये जाए।

7— स्तनपान में मदद हेतु प्रसूता केन्द्रों में स्टाफ की नियुक्ति।

8— माँ प्रोग्राम में प्राइवेट अस्पतालों की भागीदारी।

9— एम0बी0बी0एस0 की पढ़ाई में स्तनपान पढ़ाया जाय तथा इस विधा में इन्हें प्रवीण किया जाए।

10— प्राकृतिक आपदाओं के लिये कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाय, जिसमें स्तनपान की मदद करने वालों को जल्द भेजा जाय। डिब्बाबंद दूध के डिब्बे न भेजे जाए।

Photo credit: IndiaSpend/Swagata Yadavar

## समाज, स्तनपान के समर्थक, स्वास्थ्यकर्मी तथा अस्पताल के लिये सुझाव–

1– क्या आपका राज्य प्राकृतिक आपदाओं में स्तनपान में मदद करता है? इसकी जाँच पड़ताल करें।
2– पिछले 6–12 माह में आपदाओं में बच्चों के पोषण के बारे में जो हुआ उसकी रिसर्च करें।
3– ''सफल स्तनपान के दस कदम'' क्या आपके अस्पताल में लागू है?
4– डिब्बे का दूध सिर्फ जरूरत पर इस्तेमाल करें (WHO Guidance)।
5– अपर्याप्त स्तनपान के दुष्परिणामों पर समाचार माध्यमों से चर्चा करें।
6– संसद सदस्यों/विधान सभा सदस्यों को जागरूकता तथा मदद के लिये लिखें।
7– अपने कार्यों को सोशल मीडिया पर डालें तथा BPNI को बतायें।

Photo credit: Neelima Thakur

Photo credit: Nupur Bidla

## – अभिभावकों हेतु सुझाव –

1– जहाँ आपके परिचित की डिलीवरी होती है, वहाँ स्तनपान में मदद हेतु स्टाफ है या नहीं, इसका पता करें।
2– क्या अस्पताल में सफल स्तनपान के दस कदम लागू हैं?
3– जो पता चले उसे BPNI को बतायें।

Photo credit: IndiaSpend/Swagata Yadavar
https://www.indiaspend.com/breastfed-right-how-shrirampurs-babies-escape-malnutrition/

# सफल स्तनपान के लिए दस कदम.....

**महत्वपूर्ण प्रबंधन प्रक्रियाएँ:–**

1.ए. सभी चिकित्सालयों द्वारा विश्व स्वास्थय विधान सभा द्वारा प्रस्तावित अंर्तराष्ट्रीय दूग्ध विक्रेताओं पर लागू आई॰एम॰एस॰ एक्ट का पूर्णतः पालन करना।

1.बी. सभी चिकित्सालयों द्वारा शिशु आहार नीति का निर्धारण करके सभी स्वास्थय कर्मचारियों एवं पालकों को जानकारी प्रदान करना।

1.सी. निरंतर शिशु के वज़न / लम्बाई के डेटा प्रबंधन की व्यवस्था करना।

2. सभी स्वास्थ्य कर्मचारियों को स्तनपान सम्बन्धित ज्ञान, क्षमता एवं कौशल में प्रशिक्षित करना।

**प्रमुख नैदानिक विधियाँ / अभ्यास:–**

3. सभी गर्भवती माताओं एवं उनके परिवारों के साथ स्तनपान के महत्व और प्रबंधन की चर्चा करना।
4. जन्म के तुरन्त बाद माताओं को स्तनपान एवं त्वचा से त्वचा स्पर्श करवाने और स्तनपान शुरू करने के लिए प्रेरित करना।
5. सभी माताओं को स्तनपान सम्बन्धित तकलीफों के निराकरण के लिए सहयोग प्रदान करना।
6. किसी भी नवजात शिशु को स्तनपान के सिवाय ऊपरी दूध, शहद, पानी आदि नहीं पिलाना।
7. माँ एवं नवजात शिशु को 24 घंटे एक साथ रहने की व्यवस्था करना।
8. स्तनपान सम्बन्धित शिशु की समस्याओं का समाधान करना।
9. माताओं को बोतल, चूसनी आदि का प्रयोग नहीं करने के लिए प्रेरित करना।
10. चिकित्सालय से छूट्टी के पश्चात पालकों को स्तनपान की जानकारी एवं समयांतर शिशु के वजन की उचित व्यवस्था करना।

bpni
putting child nutrition at the forefront of social change

IBFAN
defending breastfeeding

WBTi
World Breastfeeding Trends Initiative (WBTi)


## Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI)

**WBTi Global Secretariat Office**

*Address:* BP-33, Pitampura, Delhi 110 034. *Tel:* +91-11-27312705/06, 42683059

bpni@bpni.org
http://www.bpni.org
@bpniindia
@bpni.org
https://www.youtube.com/user/bpniindia


## About BPNI

The Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI) is a 28 years old registered, independent, non-profit, national organisation that works towards protecting, promoting and supporting breastfeeding and appropriate complementary feeding of infants and young children. BPNI works through policy analysis, advocacy, social mobilization, information sharing, education, research, training and monitoring the company compliance with the IMS Act. BPNI is the Regional Coordinating Office for International Baby Food Action Network (IBFAN), South Asia. BPNI also serves as the global secretariat for World Breastfeeding Trends Initiative (WBTi) programme, that analyses policy & programmes and galvanises action at country level.

## BPNI's Ethical Policy

BPNI does not accept funds or any support from the companies manufacturing baby foods, feeding bottles or infant feeding related equipments. BPNI does not associate with organizations having conflicts of Interest. We request every one to follow this ethical stance while celebrating World Breastfeeding Week.


## Acknowledgements

This action folder has been produced by the BPNI with the support of the UNICEF India. BPNI profusely thanks Swagata Yadavar/Indiaspend for allowing to use their pictures.

**Written and edited by:** Dr. J.P. Dadhich and Dr. Arun Gupta

**Reviewed by:** Dr Praveen Kumar, Dr Omesh Khurana, Dr CB Dasgupta and Ms Gayatri Singh

**Designed by:** Amit Dahiya

हिन्दी रूपान्तर : डा. बी.बी. गुप्ता, डा. के.पी. कुशवाहा एवं श्रीमती रन्जू गुप्ता, गोरखपुर
सहयोग : डा. महिमा मित्तल, प्रवीण दूबे, बाल रोग विभाग, बी.आर.डी. मेडिकल कालेज, गोरखपुर


*Your local contact here*